

# CHAPTER - 12

## लखनवी अं दाज़

प्रश्न 1. लेखक डॉ. नवाब साहब के किन हाव-भावों में महसूस हुआ कि वे इससे अनजान अर्थों के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं? [A.I. CBSE 2008; केंद्रीय बोर्ड प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2009; CBSE]

उत्तर-लेखक को डिब्बे में आया देखकर नवाब साहब की आँखों में असंतोष छा गया। ऐसे लगा मानो लेखक के आने से उनके एकांत में बाधा पड़ गई हो। उन्होंने लेखक से कोई बातचीत नहीं की। उनकी तरफ़ देखा भी नहीं। वे खिड़की के बाहर देखने का नाटक करने लगे। साथ ही डिब्बे की स्थिति पर गौर करने लगे। इससे लेखक को पता चल गया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने को उत्सुक नहीं हैं।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

[Imp.] [CBSE 2008, 2008 C; CBSE]

उत्तर-नवाबों के मन में अपनी नवाबी की धाक जमाने की बात रहती है। इसलिए वे सामान्य समाज के तरीकों को दुकराते हैं तथा नए-नए सूक्ष्म तरीके खोजते हैं, जिससे उनकी अमीरी प्रकट हो। नवाब साहब अकेले में बैठे-बैठे खीरे खाने की तैयारी कर रहे थे। परंतु लेखक को सामने देखकर उन्हें अपनी नवाबी दिखाने का अवसर मिल गया। उन्होंने दुनिया की रीत से हटकर खीरे सूँघे और बाहर फेंक दिए। इस प्रकार उन्होंने लेखक के मन पर अपनी अमीरी की धाक जमा दी।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है? यशपाल के इस विचार से आप कहां तक सहमत हैं? [केंद्रीय बोर्ड प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2008; CBSE 2010; CBSE]

उत्तर-हम यशपाल के विचारों से सहमत हैं। बिना घटना, बिना पात्र और बिना विचार के कहानी नहीं लिखी जा सकती। कहानी का अर्थ ही है-'क्या हुआ' उसे कहना। अतः जब घटना नहीं होगी तो यह कैसे पता चलेगा कि क्या हुआ? बिना पात्रों के कुछ होगा कैसे, घटेगा कैसे? कहानी में कोई-न-कोई विचार, बात या उद्देश्य भी अवश्य होता है।

प्रश्न 4. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे? और क्यों? [CBSE]

उत्तर- हवाई भोज

या

खयाली भोजन

क्यों-इस निबंध में मुख्य घटना नवाब साहब की है जो कल्पना से ही खीरे का स्वाद ले रहे हैं।

### रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 5. (क) नवाब साहब द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए। [CBSE 2012, 2010]

अथवा

नवाब साहब ने खीरे की फाँकों के साथ क्या प्रक्रिया की? [CBSE]

उत्तर-नवाब साहब बड़े आराम के साथ पालथी मारकर बैठे। उनके सामने तैलिये पर कुछ ताजे-कच्चे खीरे रखे हैं। वे ऐसे बैठे हैं मानो दिनभर में उन्हें एक यही महत्वपूर्ण काम करना है। धीरे-से उन्होंने तैलिये को उठाया, झाड़ा और बिछाया। अब सीट के नीचे से पानी का लोटा उठाया। उस पानी से खिड़की के बाहर करके खीरे धोए। धोए हुए खीरे तैलिये पर रखे। फिर एक खीरे को उठाया। जेब से चाकू निकाला। चाकू से खीरे का सिर काटा। एक सिरे को चाकू से गोदा। उसकी झाग निकाली। फिर बड़ी कलाकारी और कोमलता से खीरे को छीला। तत्पश्चात् उसे काटकर उसकी फाँकों बनाई। उन्हें एक-एक करके बड़े क्रम से सजाकर तैलिये पर रखा। अब उस पर जीरा-नमक और लाल मिर्च की सुखी बुरकी। अब ये खीरे खाने के लिए तैयार थे।

(ख) किन-किन चीजों का रसास्वादन करने के लिए आप किस प्रकार की तैयारी करते हैं?

उत्तर-परीक्षोपयोगी नहीं।

प्रश्न 6. खीरे के संबंध में नवाब साहब के व्यवहार को उनकी सनक कहा जा सकता है। आपने नवाबों की और भी सनकों और शौक के बारे में पढ़ा-सुना होगा। किसी एक के बारे में लिखिए। [CBSE]

उत्तर-परीक्षोपयोगी नहीं।

प्रश्न 7. क्या सनक का कोई सकारात्मक रूप हो सकता है? यदि हाँ तो ऐसी सनकों का उल्लेख कीजिए।

[केंद्रीय बोर्ड प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2008]

उत्तर-हाँ, सनक का सकारात्मक रूप भी हो सकता है। प्रायः गाँधी, सुभाष, विवेकानंद, मदन मोहन मालवीय आदि महापुरुष भी सनकी हुए हैं। उन्हें जिस चीज की सनक सवार हो जाती है उसे पूरा करके ही छोड़ते थे। कौन नहीं जानता कि गाँधी जी को अहिंसात्मक आंदोलनों की सनक थी। आंदोलन में जरा-सी भी हिंसा हुई तो वे आंदोलन वापस ले लेते थे। विवेकानंद को ईश्वर को जानने की सनक थी। वे जिस किसी संत-महात्मा से मिलते थे, उनसे पूछते-क्या आपने ईश्वर को देखा है। उनकी इसी सनक ने उन्हें ज्ञानी बना दिया। वे रामकृष्ण परमहंस के संपर्क में आ गए। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

## भाषा-अध्ययन

प्रश्न 8. निम्नलिखित वाक्यों में से क्रियापद छाँटकर क्रिया-भेद भी लिखिए—

- (क) एक सफ़ेदपोश सन्जन बहुत सुविधा से पालथी मारे बैठे थे।  
(ख) नवाब साहब ने संगति के लिए उत्साह नहीं दिखाया।  
(ग) ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है।  
(घ) अकेले सफ़र का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे।  
(ङ) दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला।  
(च) नवाब साहब ने सतृष्णा आँखों से नमक-मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की ओर देखा।  
(छ) नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए।  
(ज) जब से चाकू निकाला।

उत्तर— (क) बैठे थे	— अकर्मक क्रिया।
(ख) दिखाया	— सकर्मक।
(ग) बैठे	— अकर्मक।
कल्पना करना	— अकर्मक।
है	— अकर्मक।
(घ) काटना	— सकर्मक।
खरीदे होंगे	— सकर्मक।
(ङ) काटा	— सकर्मक।
गोदकर	— सकर्मक।
निकाला	— सकर्मक।
(च) देखा	— अकर्मक (प्रयोग)
(छ) लेट गए	— अकर्मक।
थककर	— अकर्मक।
(ज) निकाला	— सकर्मक।

### पाठेतर सक्रियता

• 'किचला शौक फरमाएँ', 'आदाब-अर्ज ... शौक फरमाएँ' जैसे कथन शिष्टाचार से जुड़े हैं। अपनी मातृभाषा के शिष्टाचार सूचक कथनों की एक सूची तैयार कीजिए।

उत्तर—परीक्षोपयोगी नहीं।

• 'खीरा ... मंटे पर बोझ डाल देता है' क्या वास्तव में खीरा अपच करता है? किसी भी खाद्य पदार्थ का पच-अपच होना कई कारणों पर निर्भर करता है। बड़ों से बातचीत कर कारणों का पता लगाइए।

उत्तर—परीक्षोपयोगी नहीं।

• खाद्य पदार्थों के संबंध में बहुत-सी मान्यताएँ हैं जो आपके क्षेत्र में प्रचलित होंगी, उनके बारे में चर्चा कीजिए।

उत्तर—खाद्य पदार्थों के बारे में धारणा है कि गर्म व्यंजनों के बाद ठंडे बर्फीले पदार्थ नहीं खाने चाहिए। खीरे, ककड़ी या तरबूज के बाद पानी नहीं पीना चाहिए। भोजन करने के बाद छछ तो पी जा सकती है किंतु पानी नहीं पीना चाहिए।

• पतनशौल सामंती वर्ग का चित्रण प्रेमचंद ने अपनी एक प्रसिद्ध कहानी 'शतरंज के खिलाड़ी' में किया था और फिर बाद में सत्यजीत राय ने इस पर इसी नाम से एक फ़िल्म भी बनाई थी। यह कहानी बुँदकर पढ़िए और संभव हो तो फ़िल्म भी देखिए।

उत्तर—छात्र पढ़ें और देखें।